श्री शान्तिनाथ

ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री शान्तिनाथ ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम, ११०० प्रतियाँ
कवर-पृष्ठ	:	प्राची जैन शिवपुरी
प्रसंग	:	२२वाँ चातुर्मास, २०२०, शिवपुरी
लागत मूल्य	:	१५/-
प्रकाशक	:	श्री जैनोदय विद्या समूह
प्राप्ति स्थान	:	१. संजीव कुमार जैन 2/251 सुहाग नगर, फिरोजाबाद (उ.प्र.) सम्पर्क—9412811798, 9412623916 २. निखिल, सुशील जैन करैरा, झाँसी 9806380757, 9407202065
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

सुव्रत के अपने

अन्तर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस तरह भक्तामर स्तोत्र के द्वारा श्रीवृषभदेव की भक्ति दीप अर्चना के माध्यम से की जाती है उसी तरह शान्तिप्रदाता जगत के शान्तिकारक श्री शान्तिनाथ भगवान की भक्ति करने का यह नया सोपान **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य **अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज** ने प्रस्तुत कृति '**श्री शान्तिनाथ ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना**' की रचना करके हम सबको दिया है जो कि भक्त को जन्म-जरा और मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाला एवं अतिशय पुण्य को बढ़ाने वाला है। श्रद्धा के साथ भक्ति की भावना से ४८ अर्घ्य/दीपों के साथ अथवा एक दीप के साथ यह आराधना करने से सभी इष्ट कार्य की सिद्धि होती है।

राजेश, अशोक, अर्चित, पुनीत, नमन, विशाल, रूपेश, सौरभ, रौनक, पीयूष, अभिषेक, रोहित, कलश पाठशाला की बहनें प्राची, ऐश्वर्या, चाहना, आशी, स्वाति, खुशी, प्रतिभा, रूपाली आदि लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा. ब्र. संजय, मुरैना- 9425128817

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा....
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

अभिषेक स्तुति

(लय–जीवन है पानी की बूँद...)

प्रासुक जल से जिनवरजी का न्हवन कराओ रे।
कलशों से धारा हाँ–हाँ–२, सब– रोज कराओ रे॥ प्रासुक...

१. ये अरिहंत जिनेश्वर हैं, परमपूज्य परमेश्वर हैं।
परम शुद्ध काया वाले, जगतपूज्य धर्मेश्वर हैं॥
कलशों के पहले हाँ हाँ–२, सब शीश झुकाओ रे। प्रासुक...

२. देव रतन के कलशा ले, नीर क्षीरसागर का ले।
बिम्बों के अभिषेक करें, बिम्ब अकृत्रिम छवि वाले॥
बिम्बों की महिमा हाँ हाँ–२, सब मिलकर गाओ रे। प्रासुक...

३. रतन कलश भी पास नहीं, क्षीर सिन्धु का नीर नहीं।
भाव भक्तिमय हम आये, प्रासुक लेकर नीर सही॥
ढारो रे कलशा हाँ हाँ–२, सब पुण्य कमाओ रे। प्रासुक...

४. भगवन् कोई न छू सकते, किन्तु बिम्ब तो छू सकते।
वो भी बस अभिषेक समय, इन्हें शीश पर धर सकते॥
मौका ये पाके हाँ हाँ–२, सब होड़ लगाओ रे। प्रासुक...

५. फिर प्रक्षालन भी कर दो, श्रद्धा से गंधोदक लो।
गंधोदक से रोग सभी, तन मन के अपने हर लो॥
झूमो रे नाचो हाँ हाँ–२, जयकार लगाओ रे। प्रासुक...

६. प्रासुक जल की यह धारा, समझो ना केवल धारा।
कर्त्ता दर्शक 'सुव्रत' के, कर्मों को धोती धारा॥
धारा जल धारा हाँ हाँ–२, सब करो कराओ रे। प्रासुक...

===

अभिषेक आरती

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ....)

प्रभु का करके अभिषेक, यहाँ सिर टेक, ज्योति उजियारी।
हम करें आरती प्यारी॥

१. श्री वृषभ–वीर–प्रभु चौबीसौं, श्री परमेष्ठी भगवन् पाँचों।
श्री देव–शास्त्र–गुरु नवदेवों की न्यारी, हम करें आरती प्यारी॥
प्रभु का...

२. जैसे अभिषेक निराले हैं, वैसे यह दीप उजाले हैं।
अभिषेक आरती की जग में बलिहारी, हों भव–भव में उपकारी॥
प्रभु का...

३. प्रभु का अभिषेक न्हवन करके, जो करें आरती चित धरके।
उनके टलते दुख दर्द कष्ट बीमारी, वे रह न सकें संसारी॥
प्रभु का...

४. जब अशुभ स्वप्न में भरत फँसे, कर न्हवन आरती भरत बचे।
भरतेश्वर ने आदीश्वर आज्ञा धारी, हुए मुक्ति के अधिकारी॥
प्रभु का...

५. थी श्रीपाल को बीमारी, जिससे मैंना थी दुखियारी।
अभिषेक आरती गंधोदक दुख हारी, वह करे महोत्सव भारी॥
प्रभु का...

६. अभिषेक न धूल धुलाना है, अभिषेक धर्म अपनाना है।
अभिषेक देव स्वर्गों में करके भारी, होते जिन आज्ञाकारी॥
प्रभु का...

७. अभिषेक आरती पूजाएँ, सौभाग्य पुण्य से मिल पाएँ।
सो 'सुव्रत' हों जिनशासन के आभारी, अब पायें मोक्ष सवारी॥
प्रभु का...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥

तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।

वे घर-घर हमें फिराएँ, पीछे से चाकू घौंपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

भजन

शान्तिप्रभु मेरे जीवन की नाँव।
हे प्रभु! नैया पार लगा दो[२], दो चरणों की छाँव।
टूटी फूटी मेरी नैया, तुम बिन कौन खिवैया।
भोग व्यसन के तूफानों में, कोई नहीं बचैया॥
अब तो मुझको दे दो सहारा[२] दुखने लागे पाँव।
शान्तिप्रभु मेरे जीवन...॥१॥

मिथ्या की आँधी से यह नैया, उल्टी दिशा में जाए।
विषय-कषायों की भँवरों में, डोले व टकराए॥
प्रभु! नाजुक पतवार सँभालो[२], दे दो किनारा गाँव।
शान्तिप्रभु मेरे जीवन...॥२॥

बुरे-विचारों की लहरों ने, नैया की कमजोर।
राग-द्वेष वाले ज्वार-भाटों का, चंदा करता शोर॥
आसक्ति के खारे जल में[२], मेरा बचा लो बहाव।
शान्तिप्रभु मेरे जीवन...॥३॥

भूत पिशाचों के मच्छों ने, नैया की बेहाल।
लेकिन नाम तुम्हारा जप के, होती मालामाल॥
अन्तर बाहर भर दो शान्ति[२], दो निज रूप स्वभाव।
शान्तिप्रभु मेरे जीवन...॥४॥

सारी दुनियाँ शान्ति खोजे, राजा रंक फकीर।
जिसको भी तुम मिलते उसकी, सजती है तकदीर॥
'सुव्रत' के मन मन्दिर में आओ[२], ढलने लगी अब साँझ।
शान्तिप्रभु मेरे जीवन...॥५॥

===

श्री शान्तिनाथ पूजन

स्थापना (शंभु)

हे! शान्ति प्रदाता शान्ति प्रभु, चैतन्य शान्ति के अधिवासी।
हो जीव मात्र के इष्ट तुम्हीं, हम विश्व शान्ति के अभिलाषी॥
सुख शान्ति शीघ्र तुम सम पाएँ, सो शान्ति प्रभु को पूज रहे।
प्रभु हृदय वेदिका पर तिष्ठो, भक्तों के नमोऽस्तु गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक सर्वोपद्रव शान्तिकारक त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

है जन्म सुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ नव यौवन में।
है मरण दुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ इस जीवन में॥
दुख मातम रोग अशान्ति हरो, जल जैसी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक सर्वोपद्रव शान्तिकारक त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

है भव भोगों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग माया में।
रिश्तों-नातों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ इस काया में॥
धन पद गृह युद्ध अशान्ति हरो, चन्दन सी शान्ति करो आहा
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक सर्वोपद्रव शान्तिकारक त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

है स्वर्ग सुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ सिंहासन में।
चौरासी लाख योनियों में, है शान्ति कहाँ भव भटकन में॥
जग भागमभाग अशान्ति हरो, अक्षत सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक सर्वोपद्रव शान्तिकारक त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

है घर गृहस्थी में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ सुर कन्या में।
है स्त्री सुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ विष कन्या में॥
स्त्री पुरुषों की अशान्ति हरो, पुष्पों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक सर्वोपद्रव शान्तिकारक त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

है भूख प्यास में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ विष अमृत में।
छप्पन भोगों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ रस व्यंजन में॥
रस भोजन भोग अशान्ति हरो, नैवेद्य सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक सर्वोपद्रव शान्तिकारक त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

है अंधकार में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ उजयारों में।
बिजली बल्बों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ नभ तारों में॥
दैनिक जीवन की अशान्ति हरो, दीपक सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक सर्वोपद्रव शान्तिकारक त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

है दौड़-धूप में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ कर्मों में।
है राग-द्वेष में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ नो-कर्मों में॥
परिषह उपसर्ग अशान्ति हरो, धूपों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक सर्वोपद्रव शान्तिकारक त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

खोने-पाने में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ घर भरने में।
निंदा ईर्ष्या में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ कुछ करने में॥

भय वैर विरोध अशान्ति हरो, फल जैसी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक सर्वोपद्रव शान्तिकारक त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति विधायक सर्वोपद्रव शान्तिकारक त्रयपदधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

कृष्ण सप्तमी भाद्र को, तजकर स्वर्ग विमान।
ऐरा माँ के गर्भ में, वसे शान्ति भगवान्॥

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदह कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे शान्ति विराट।
विश्वसेन के आँगने, ज्ञान-बताशा बाँट॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म-तिथी में तप धरे, तजे अशान्ति शोर।
शान्तिनाथ मुनि को हुई, नमोऽस्तु चारों ओर॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दशमी शुक्ला पौष में, पाया केवलराज।
नमन शान्ति अर्हन्त को, करती भक्त समाज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चौदस कृष्णा ज्येष्ठ को, मोक्ष गए शान्तीश।
कुन्दप्रभ कूट शाश्वतगिरि, को वंदन नत शीश॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

[यदि मात्र पूजन करना हो तो पेज नं. २६ पर जयमाला करके पूर्ण करना चाहिए।]

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्य...। -४

(जोगीरासा)

जिनशासन की परम्परा में, चौबीसी की धारा।
धर्मध्वजा को फहराती हैं, देती धर्म सहारा॥
वृषभनाथ से महावीर तक, चौबीसों हम पूजें।
फिर भी शान्तिनाथ स्वामी के, जय-जयकारे गूँजें॥ ओम्
हर प्राणी सुखशान्ति तलाशें, दुख से हैं घबराए।
सारी दुनियाँ घूम चुके पर, कहीं शान्ति ना पाए॥
शान्तिनाथ के सुनके अतिशय, हम भी बने पुजारी।
हे! करुणाकर करुणा करदो, दे दो मोक्ष सवारी॥ओम्
दुनियाँ के उपसर्ग शान्त, हों भय संकट ना आएँ।
रोग-शोक दुख वियोग न हों, ऋद्धि-सिद्धि सब पाएँ॥
विश्वशान्ति की करें भावना, अपने कर्म नशाएँ।
'विद्या' के 'सुव्रत' को स्वामी, मंगल शान्ति दिलाएँ॥ओम्
तेरी शान्ति मेरी शान्ति, सबकी शान्ति होवे।
शान्ति शान्ति होए जगत में, घर-घर शान्ति होवे॥
शान्ति शान्ति होए हृदय में, धार्मिक शान्ति होवे।
शान्तिनाथ को करके नमोस्तु, आतम शान्ति होवे॥ओम्
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम्

===

श्री चन्द्रप्रभ ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना

(लय–माता तू दया करके...)

जय कर्म इन्द्रियाँ कर, जो पूज्य हुए जिनवर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१॥

जब अवधिज्ञान पाए, तो धर्म दिए हितकर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२॥

परमावधि ज्ञान किए, परमातम में वस कर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३॥

सर्वावधि ऋद्धि पा, सुख शान्ति दिए भर-भर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४॥

गुण अनन्त-अवधि पाकर, आतम के गुण गाकर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं णमोअणंतोहिजिणाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥५॥

(लघु चौपाई)

कोष्टबुद्धि का पाकर सार, सबको दिए शान्ति भण्डार।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥६॥

बीज बुद्धि का पा आलोक, स्वामी हरें जगत के शोक।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥७॥

पदानुसारी पाकर धाम, शान्ति बनाएँ सबके काम।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥८॥

संभिन्नश्रोतृ पाकर ज्ञान, स्वामी करें जगत कल्याण।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमोसंभिण्णसोदाराणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥९॥

स्वयंबुद्ध से धर वैराग्य, शान्ति जगाएँ सबके भाग्य।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१०॥

(जोगीरासा)

रंग-बिरंगे जगत नजारे, हमको खूब लुभाएँ।
शान्तिनाथ जी जगत त्याग कर, शुद्धातम चमकाएँ॥
तीर्थंकर प्रत्येकबुद्ध जी, शान्तिनाथ कहलाएँ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, हमको शान्ति दिलाएँ॥

ॐह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥११॥

पर से पाकर गुण शिक्षाएँ, जीते सभी परीक्षा।
शुद्ध-बुद्ध एकत्व चेतना, ध्याने देते दीक्षा॥

बोधितबुद्ध देव तीर्थंकर, शान्तिनाथ कहलाएँ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, हमको शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१२॥

अपने परके सरल विषय जो, मन के जान रहा हो।
फिर भी उनमें कभी न रमता, सम्यग्ज्ञान रहा वो॥
ज्ञान मनःपर्यय-ऋजुमति धर, शान्तिनाथ कहलाएँ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, हमको शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१३॥

अपने पर के कुटिल विषय जो, मन के जान रहा हो।
फिर भी उनमें कभी न रमता, सम्यग्ज्ञान रहा वो॥
ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय धर, शान्तिनाथ कहलाएँ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, हमको शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१४॥

(हाकलिका)

दस पूर्वों के जो ज्ञाता, भक्तों को दें सुख साता।
दस पूर्वी अखियाँ खोलो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐह्रीं णमो दसपुव्वियाणं (दसपुव्वीणं) श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१५॥

चौदहपूर्वी ऋद्धि धरें, भक्तों की समृद्धि करें।
चौदह पूर्वी सुख तो लो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वियाणं (चउदसपुव्वीणं) श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१६॥

जो अष्टांग निमित्त धरें, खुद को पर को मुक्त करें।
कुशल मंत्र चेतन धो लो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ १७॥

अणिमा आदिक ऋद्धि धरें, निज-पर का उद्धार करें।
ऋद्धि विक्रिया ले डोलो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमोविउव्वणपत्ताणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१८॥

विद्याधर नर व्रतधारी, मुक्तिरमा के अधिकारी।
विद्याधर सम सुख घोलो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१९॥

चारणऋद्धि धरें स्वामी, रोग-शोक हरते स्वामी।
चारणऋद्धि मंत्र बोलो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २०॥

(सखी)

जो बिना पढ़े हों ज्ञानी, वो प्रज्ञा श्रमण निशानी।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२१॥

आकाश गमन जो करते, भक्तों की रक्षा करते।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२२॥

जो कभी न मारें प्राणी, आशीर्विष धर कल्याणी।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो आसिविसाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२३॥

जो कुपित दृष्टि ना धरते, हम सब पर करुणा करते।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२४॥

तप कठिन करें ले दीक्षा, कर्मों की करें परीक्षा।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २५॥

(शुद्ध गीता)

तपस्या खूब करके भी, चमकती देह है जिनकी।
उन्हीं की अर्चना करके, सँवरती जिन्दगी सबकी॥
धरें वह दीप्ततप हम भी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्ति प्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२६॥

करें आहार तो लेकिन, निहारों पर विजय पा ली।
मिला यह साधना का फल, दिए भक्तों को खुशहाली॥
धरें वह तप्ततप हम भी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्ति प्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२७॥

महातप खूब करके जो, ध्वजा जिनधर्म की धारें।
करें उपवास कल्याणी, उतारें पार भव तारें॥
महातप पूज लें हम भी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्ति प्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२८॥

तपस्या घोर करके जो, करें हर हल समस्या को।
इन्हीं की अर्चना करके, सफल अपनी तपस्या हो॥
भजें हम घोर तप स्वामी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्ति प्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २९॥

धरें ऋषि घोर गुण न्यारे, तपस्या के सहारे से।
हरें संसार की पीड़ा, बने सबके दुलारे से॥
धरें वह घोर गुण हम भी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्ति प्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३०॥

(चौपाई)

विश्व विनाशक बल धारें पर, घोरपराक्रम करें हितंकर।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३१॥

महा अघोर ब्रह्म गुण ज्ञानी, जगत हितैषी केवलज्ञानी।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३२॥

ऋषियों का तन छूकर आई, आमर्षौषधि ऋद्धि सुहाई।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३३॥

लार-थूक-कफ खेल्ल कहाएँ, तप से औषधि रूप सुहाएँ।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३४॥

देह पसीना जल्ल कहाएँ, तप से औषधि रूप सुहाएँ।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३५॥

(दोहा)

मल-मूत्रों को छू पवन, करे स्वस्थ तन प्राण।
विप्रुष-औषधि के धनी, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो विट्ठोसहिपत्ताणं (विप्पोसहिपत्ताणं) श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३६॥

वायु तन छूकर करे, स्वस्थ सुखी इन्सान।
सर्वौषधि गुण के धनी, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३७॥

बिना थके चिन्तन करें, मुहूर्त में श्रुतज्ञान।
मनोबली के नाथ हैं, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३८॥

बिना थके वाचन करें, मुहूर्त में श्रुतज्ञान।
वचनबली के नाथ हैं, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो वचिबलीणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३९॥

(विष्णु)

वज्र समान कायबल पाकर, कभी न पाप करें।
मुक्तिवधू से व्याह रचाने, कायोत्सर्ग करें॥
भेद-ज्ञान के योग्य कायबल, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४०॥

क्षीर समान भोज्य हो जाता, तप की महिमा से।
सम्यक् रूप तपस्या होती, प्रभु की गरिमा से॥
ऋद्धि क्षीरस्रावी ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४१॥

नीरस भोजन घी जैसा हो, तप की महिमा से।
सम्यक् रूप साधना होती, प्रभु की गरिमा से॥
सर्पिस्रावी गुण ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४२॥

कटुक भोज्य भी मधुर मिष्ट हो, तप की महिमा से।
सम्यक् रूप अर्चना होती, प्रभु की गरिमा से॥
ऋद्धि मधुस्रावी ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४३॥

जहर बने अमृत के जैसा, तप की महिमा से।
सम्यक् रूप भावना होती, प्रभु की गरिमा से॥
अमृतस्रावी गुण ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमडसवीणं (अमियसवीणं)श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४४॥

ऋषि आहार शेष ऐसा हो, तप की गरिमा से।
कटक पेट भर रहे साथ में, प्रभु की महिमा से॥
यह अक्षीणमहानस-आलय, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... /दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४५॥

तीनलोक के सिद्ध आयतन, सिद्धशिला तक जो।
चरण धूल सिद्धों की पाने, सादर वन्दन हो॥
ओम नमः सिध्देभ्यः भजकर, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोएसव्वसिद्धायदणाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... /दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४६॥

अवगुण त्यागें सद्गुण धारें, वर्धमान जैसे।
जिनके हम श्रदालु जिन बिन, रहें कहो कैसे॥
वर्धमान जैसी चर्या को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४७॥

जिनशासन में संचालित हो, आज वीर शासन।
सर्व साधुओं की धारा यह, करे धर्म रक्षण॥
गौतम गुरु से विद्या गुरु तक, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं णमो भयवदो महदि महावीरवड्ढमाण बुद्धरिसिणं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... /दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप शान्ति, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

शान्तिनाथ जिनवर करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वर्द्धिऋद्धि सम्पन्न श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

विघ्न हरण मंगलकरण, शान्तिनाथ भगवान्।
जिनकी पूजन से मिले, वीतराग विज्ञान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! शान्ति प्रभो की, जय-जय अतिशयकारी की।
जय हो! जय हो! दया सिन्धु की, जय-जय मंगलकारी की॥
वीतराग - सर्वज्ञ - हितैषी, महिमा खूब तुम्हारी है।
सबके दिल पर छाए रहते, अजब-गजब बलिहारी है॥१॥
पिछले भव में रहे मेघरथ, राज-पाठ जिनने छोड़ा।
मुनि बन तीर्थंकरप्रकृति का, नाम कर्म बन्धन जोड़ा॥
फिर प्रायोपगमन धारण कर, कर संन्यासमरण उत्तम।
काया तज अहमिन्द्र बने फिर, हस्तिनागपुर लिया जनम॥२॥
विश्वसेन नृप ऐरा रानी, तुमको पाकर धन्य हुए।
गर्भ जन्म कल्याणक करके, सारे भक्त प्रसन्न हुए॥
शंख सिंह भेरी घण्टा से, जन्म सूचना पाकर के।
चार निकायों के देवों ने, पर्व मनाया आकर के॥३॥
गर्भ-भवन में शचि-इन्द्राणी, जाकर के माँ बालक को।
सुला दिया माया-निद्रा से, उठा लिया जिन-बालक को॥
सौंप दिया सौधर्म इन्द्र को, इन्द्र चले ऐरावत से।
सुमेरु पर जन्माभिषेक कर, नाम शान्तिनाथ रक्खे॥४॥
चक्र शंख सूरज चंदादिक, चिह्न सुनहरे थे तन में।
होकर कामदेव बारहवें, किन्तु रहे निज चेतन में॥
कुमारकाल बीत जाने पर, विश्वसेन निज राज्य दिए।

चौदह रत्न और नौ निधियाँ, प्रकट हुए जो भोग लिए॥ ५॥
शान्ति चक्रवर्ती ने इक दिन, दर्पण में दो मुख देखे।
आत्मज्ञान वैराग्य हुआ तो, क्षणभंगुर वैभव फैंके॥
ज्यों घर तजने का सोचे तो, लौकान्तिक अनुमोदन पा।
राज्य दिया नारायण सुत को, फिर दीक्षा अभिषेक हुआ॥ ६॥
तब सर्वार्थसिद्धि पालकी, से गृह तजने यतन किए।
सहस्त्र आम्रवन में दीक्षा ले, पंचमुष्ठि केशलौंच किए॥
शान्तिनाथ जब बने दिगम्बर, धरती अम्बर गूँज पड़े।
ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा तो, भक्ति पुण्य सब लूट चले॥७॥
मन्दिरपुर में सुमित्र राजा, दीक्षा का आहार दिए।
पंचाश्चर्य पुण्य पाया तो, सब ने जय-जयकार किए॥
सोलह वय छद्मस्थ बिता के, बने केवली शान्तीश्वर।
समवसरण फिर हुआ सुशोभित, थे छत्तीस पूज्य गणधर॥ ८॥
मासिक योगनिरोध धारकर, श्रीसम्मेदशिखर पर जा।
शुक्लध्यान से कर्म नशाकर, सिद्ध मोक्ष में बने अहा॥
जो श्रीषेण हुए राजा फिर, भोगभूमि में आर्य हुए।
देव हुए फिर विद्याधर जो, देव हुए बलभद्र हुए॥९॥
देव हुए वज्रायुध चक्री, फिर अहमिन्द्र मेघरथ बन।
मुनि सर्वार्थसिद्धि पहुँचे फिर, तीर्थंकर शान्ति भगवन्॥
ऐसे शान्तिनाथ भगवन् के, बारह-बारह भव सुन्दर।
शान्तिनाथ सा अन्य कौन जो, धर्म धुरंधर तीर्थंकर॥१०॥
कामदेव ने जन्म धारकर, जीती सब सुन्दरताएँ।
शान्तिनाथ ने चक्री बनकर, जय की सभी सम्पदाएँ॥
तीर्थंकर बन शान्तिनाथ ने, पाया मोक्ष कर्म कर क्षय।

कामदेव चक्री तीर्थंकर, शान्तिप्रभु की बोलो जय॥११॥
कालचक्र वश लुप्त धर्म को, वृषभ आदि प्रभु दिखलाए।
फिर भी प्रसिद्ध अवधि अंत तक, बोलो कौन चला पाए?
किन्तु बाद में शान्तिप्रभु से, मोक्षमार्ग जो प्रकट हुआ।
अपनी निश्चित अवधिकाल तक, बिन बाधा के प्राप्त हुआ॥१२॥
ऐसे शान्तिनाथ भगवन् का, ध्यान निरन्तर धारो तो।
होगा भला शान्ति भी होगी, बुध ग्रह में मत बाँधो तो॥
आज आद्य गुरु शान्तिनाथ का, चमत्कार कुछ अलग दिखे।
खण्ड-खण्ड सौभाग्य पिण्ड भी, 'सुव्रत' पुण्य अखण्ड दिखे॥१३॥

(सोरठा)

हिरण चिह्न पहचान, शान्तिनाथ प्रभु नाम है।
त्रयपद मय भगवान्, बारम्बार प्रणाम है॥
पुण्य खरीदा आज, भक्ति मूल्य का दाम दें।
शान्तिनाथ जिनराज, स्वर्ग मोक्ष सुख धाम दें॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शान्तिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, शान्तिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

महिमा—श्री शान्तिनाथ दीप अर्चना

(लय—श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री शान्तिनाथ का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
श्री शान्तिनाथ तीनों पदधर, प्रभु कामदेव चक्री जिनवर।
हो शान्ति प्रदाता शान्ति विधाता स्वामी, चरणों में है प्रणमामि॥
हो हम सबको कल्याणी॥
प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता है, संसार मोक्ष सुख कर्त्ता है।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥
हो हम सबको कल्याणी ॥
आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥
हो हम सबको कल्याणी ॥
बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥
हो हम सबको कल्याणी ॥

===

श्री शान्तिनाथजी—आरती

(छूम छूम छना ननना...)

छूम छूम छना ननना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
विश्वसेन के राज दुलारे, ऐरा माँ के नयन सितारे।-२
हस्तिनापुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
चौबीसी में सबसे न्यारे, शान्तिनाथ भगवान हमारे।-२
हैं प्राणों से प्यारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
कामदेव चक्री तीर्थंकर, वीतराग सर्वज्ञ हितंकर।-२
विश्वशान्ति के सहारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
धर्मधार को आप बहाते, कर्मों के ग्रह रोग नशाते।-२
शान्तिधारा वाले, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
आत्मशान्ति के हम अभिलाषी, विद्या गुरु के हम विश्वासी।२
'सु-व्रत' के प्रत्याशी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

चौबीसी का अर्घ्य

(लय—चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सु-व्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य (हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-खंदारजी-चंदेरी-हाटकापुरा-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारणऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो-जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

समाधि भावना

भगवन् सदैव मुझ पै, हो छत्र छाया तेरी।
चरणों में आपके ही, होवे समाधि मेरी॥
१. दर्शन तुम्हारा करके, सिर भी तुम्हें झुकाऊँ।
शास्त्रों का पान करके, तुम सा ही रूप पाऊँ॥
सत्संग करने मुझसे, होवे कभी न देरी। चरणों...
२. पर के न दोष बोलूँ, बोलूँ मधुर वचन मैं।
आगम का ले सहारा, अपना करूँ मनन मैं॥
जब तक न मोक्ष पाऊँ, रख लेना लाज मेरी। चरणों...
३. जब भी मरण हो मेरा, संन्यास से मरण हो।
मुनियों के साथ गुरु के, चरणों की बस शरण हो॥
जिनवाणी माँ की गोदी, छवि सामने हो तेरी। चरणों...
४. बचपन से आपके जो, चरणों की की हो सेवा।
यदि चाहते उसी का, बस फल यही हो देवा॥
णमोकार जपते-जपते, सल्लेखना हो मेरी। चरणों...
५. जब तक मुझे मिले ना, निर्वाण की नगरिया।
तब तक चरण तुम्हारे, मेरे मन में हो सँवरिया॥
मेरा हृदय न छोड़े, चरणों की छाँव तेरी। चरणों...
६. बस एक भक्ति तेरी, दुख संकटों को हरती।
बोधि समाधि दे के, सुख संपदा भी भरती॥
ओंकारमय बना दो, हर श्वाँस नाथ मेरी। चरणों...
७. जयवंत हो जिनशासन, हो जय-जिनेन्द्र नारा।
निर्ग्रंथ पंथ धारूँ, तजूँ पाप पंथ सारा॥
'सुव्रत' की प्रार्थना ये, बरसे कृपा घनेरी। चरणों...

===

आलोचना पाठ

(दोहा)

चौबीसों प्रभु को नमूँ, परमेष्ठी जिनराज।
कर लूँ निज आलोचना, आत्म शुद्धि के काज॥१॥

(सखी)

हे परम दयालू भगवन्, मैं करके नमोऽस्तु दर्शन।
चरणों में अरज लगाऊँ, कैसे निज दोष नशाऊँ॥२॥
मैं होकर क्रोधी मानी, कपटी लोभी अज्ञानी।
दिन भर चर्या करने में, आना-जाना करने में॥३॥
पढ़ने-लिखने लड़ने में, निंदा ईर्ष्या करने में।
सुख-दुख रोने-हँसने में, या छींक जँभाई खांसी में॥४॥
सोने-जगने सपने में, मल-मूत्र थूक तजने में।
चूल्हा चक्की चौका में, बर्तन झाड़ू पौंछा में॥५॥
भोजन जल-बिलछानी में, धोने व न्हवन पानी में।
शैम्पू सोड़ा साबुन में, फै शन अंजन-मंजन में॥६॥
या टी. व्ही. मोबाइल में, या नेट मनोरंजन में।
कृषि नौकरी धंधे में, जो हुए व्यसन अंधे में॥७॥
या दवा कीटनाशक में, बिजली मकान पावक में।
हिंसा असत्य चोरी में, अब्रह्म परिग्रह ही में॥८॥
फल पंच उदम्बर खाके, या मद्य-माँस-मधु पाके।
जो नहीं मूलगुण धारे, बाईस अभक्ष्य अहारे॥९॥
या नित्य देव दर्शन में, या कभी रात्रि भोजन में।
जल पिया कभी अनछाना, त्रय कुलाचार न जाना॥१०॥

जो लेकर नियम न पाले, प्रतिकूल धरम के चाले।
या देव-शास्त्र-गुरुओं में, या अपने या औरों में॥११॥
मैंने कर पापाचारी, जो करुणा ना हो धारी।
उससे जो जीव मरे हों, या पीड़ित घात करे हों॥१२॥
या पर से पाप कराए, या अनुमोदन मन भाए।
वह मन-वच-तन के द्वारे, टल जाएँ कषाय सारे॥१३॥
पच्चीस दोष दर्शन के, या ज्ञान चरित आगम के।
दिन रात कभी भी कैसे, जाने अनजाने जैसे॥१४॥
जो पाप हुये हों मुझसे, प्रभु आप बचालो उनसे।
धिक्! धिक्! धिक्कारो मुझको, प्रभु क्षमादान दो मुझको॥
सीता द्रोपदि या मैंना, या अंजन चंदन मैं ना।
पर नाथ! भक्त तेरा हूँ, सो शुद्धि आप सम चाहूँ॥१६॥
बस बोधि समाधि हो मेरी, हो छत्रच्छाया तेरी।
कर 'सुव्रत' अब ना देरी, प्रभु! शरण न छूटे तेरी॥१७॥

(दोहा)

वीतराग निर्दोष हैं, परमेष्ठी जिनराज।
बन जाऊँ निर्दोष मैं, सो नमोऽस्तु हो आज॥

===